ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विकसित भारत @ 2047 के अंतर्गत 'निराला का काव्य एवं विकसित भारत की संकल्पना' पर हुई राष्ट्रीय परिचर्चा

वर्धा, 15 फरवरी 2024: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विकसित भारत@2047 युवाओं की आवाज़ की संकल्पना के अंतर्गत 'निराला का काव्य एवं विकसित भारत की संकल्पना' विषय पर निराला का जयंती एवं वसंत पंचमी के अवसर पर हिंदी साहित्य विभाग की ओर से राष्ट्रीय परिचर्चा का आयोजन 14 फरवरी को महादेवी वर्मा सभागार में किया गया। उपाधि

महाविद्यालय, पीलीभीत के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. प्रणव शर्मा ने कहा कि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने सर्वहारा यानी सामान्य जन को केंद्र में रखकर छंद मुक्त कविता को गढ़ा। उनकी वह तोड़ती पत्थर और राम की शक्ति पूजा जैसी रचनाएं छंद मुक्त कविताका उत्तम उदाहरण है। केंद्रीय विश्वविद्यालय, मणिपुर के हिंदी विभाग के प्रो. अखिलेश शंखधर ने कवि निराला को रूपायन एवं रूपांतरण का कवि कहते हुए जन्मभूमि और बादल राग की रचनाओं का जिक्र किया। मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली के हिंदी संकाय के प्रो. नरेंद्र मिश्र ने बताया कि निराला बीसवीं सदी के विलक्षण कवि थे। प्रकृति, सौंदर्य, प्रेम और विद्रोह उनकी कविताओं के केंद्र में रहे हैं। उन्होंने कविता लेखन की पारंपरिक चौखट को तोड़कर स्वाधीनता के काल में लोगों में चेतना जगाने का काम किया। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. मुन्ना तिवारी ने निराला को प्रकृति पूजक कहते हुए बताया कि उनकी कविताओं

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

में शब्दों की लयात्मकता व राष्ट्रीयता प्रदर्शित होती है। विश्वविद्यालय के हिंदी साहित्य विभाग के डॉ. उमेश कुमार सिंह ने कहा कि आम जन की चिंता करने वाले निराला ही वह तोड़ती पत्थर जैसी कविता लिख सकते हैं। समापन वक्तव्य में राष्ट्रीय परिचर्चा के संयोजक, हिंदी साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. अवधेश कुमार ने कहा कि निराला परंपरा का अतिक्रमण करने वाले कवि थे। वे अपनी शर्तों पर जीते थे। उन्होंने व्यवस्था को ललकारते हुए सत्ता के साथ कभी समझौता नहीं किया। वे एक साथ गहन राग एवं विद्रोह के कवि हैं, राष्ट्रीयता एवं भारतीयता उनमें कूट-कूट कर भरी है, जिसे उनकी रचनाओं में सहज ही देखा जा सकता है। इस अवसर पर डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. एच.ए. हुनगुंद, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अंजनी कुमार राय, बी.एस. मिरगे सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

विकसित भारत @ 2047 अंतर्गत 'निराला यांची कविता आणि विकसित भारताचा संकल्प' या विषयावर राष्ट्रीय चर्चा

वर्धा, 15 फेब्रुवारी 2024: महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात विकसित भारत @ 2047 युवकांचा आवाज संकल्पने अंतर्गत 'निराला यांची कविता आणि विकसित भारताचा संकल्प' या विषयावर निराला यांची जयंती आणि वसंत पंचमीनिमित्त हिंदी साहित्य विभागातर्फे राष्ट्रीय चर्चेचे आयोजन 14 फेब्रुवारी रोजी महादेवी वर्मा सभागृहात करण्यात आले. यावेळी उपाधी महाविद्यालय, पीलीभीतचे हिंदी विभागाचे अध्यक्ष प्रो. प्रणव शर्मा म्हणाले की सूर्यकांत त्रिपाठी निराला यांनी सर्वहारा वर्गाला म्हणजेच सर्वसामान्यांना केंद्रस्थानी ठेवून मुक्तछंद कविता रचल्या. त्यांची वह तोड़ती पत्थर आणि राम की शक्ती पूजा यासारखी रचना मुक्तछंद काव्याची उत्कृष्ट उदाहरणे आहेत. केंद्रीय विश्वविद्यालय, मणिपूरच्या हिंदी विभागाचे प्रो. अखिलेश शंखधर यांनी कवी निराला यांना परिवर्तन आणि परिवर्तनाची कवी म्हणत जन्मभूमी आणि बादल राग या रचनांचा उल्लेख केला. मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्लीचे प्रो. नरेंद्र मिश्र म्हणाले की, निराला हे विसाव्या शतकातील अद्वितीय कवी होते. निसर्ग सौंदर्य, प्रेम आणि विद्रोह हे त्यांच्या कवितांच्या केंद्रस्थानी आहेत. त्यांनी काव्यलेखनाच्या पारंपारिक सीमा तोडून स्वातंत्र्य काळात लोकांमध्ये चैतन्य जागृत करण्याचे काम केले. बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाशी येथील हिंदी विभागाचे अध्यक्ष प्रो. मुन्ना तिवारी यांनी निरालाला निसर्ग उपासक संबोधून त्यांच्या कवितांमध्ये शब्दांचे रहस्य आणि राष्ट्रवाद दिसून येतो. विश्व विद्यालयाचे हिंदी साहित्य विभागाचे डॉ. उमेश कुमार सिंह म्हणाले की सर्वसामान्यांची काळजी घेणारे दुर्मिळ व्यक्तीच तोडती पत्थरसारखी कविता लिहू शकतात. समारोपीय निवेदनात राष्ट्रीय चर्चेचे संयोजक, हिंदी साहित्य विभागाचे अध्यक्ष प्रो. अवधेश कुमार म्हणाले की निराला ही परंपरा ओलांडणारे कवि होते. ते स्वतःच्या अटींवर जगले. त्यांनी व्यवस्थेला आव्हान दिले आणि सत्तेशी कधीही तडजोड केली नाही. या प्रसंगी डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. एच.ए. हुनगुंद, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अंजनी कुमार राय, बी.एस. मिरगे यांच्यासह मोठ्या संख्येने शोधार्थी आणि विद्यार्थी उपस्थित होते.